Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-5, Continuous Issue-11, January - February 2022

बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में सूफी विचारधारा का पुनर्मूल्यांकन

प्रस्तावना -

आज विश्व हिंसा, युद्ध और आतंक के जिस दौर से गुजर रहा है उसमें सम्पूर्ण मानव सभ्यता एक बडे बदलाव की साक्षी होने जा रही है। परिवर्तन तो वैसे भी मानव जीवन का शश्वत सत्य है किंतु जब मानव सभ्यता स्वयं टकराव के दौर से गुजर रही हो तब परिवर्तन का यह अनुभव कटु,पीडादायी और कभी - कभार प्रलयकारी भी साबित होता है। देखा जाये तो एक लम्बें समय से विश्वभर में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में ऐसी विध्वंसकारी ताकते अपने मंसूबों को अंजाम देती रही हैं और मानव सभ्यता को नुकसान पहुंचाती रही है। एक भारतवासी होने के नाते यह एक सुखद अनुभूति होती है कि हमारे देश की सनातन संस्कृति ने कभी किसी अन्य देश की संस्कृति या सभ्यता को ठेस नहीं पहुंचाई। हालांकि बहुधा हमनें ही अपनी मातृभूमि को पीडित, शोषित और दमित होते देखा। लेकिन वर्ष 2014 के बाद से वैश्विक स्तर पर भारत की छवि एक बार फिर मजबूत हुई है, दुनिया एक बार फिर भारतीय संस्कृति की सहनशीलता और वसुधैव कुटुम्बकम की हमारी अवधारणा के प्रति नतमस्तक हो रही है। सनातन संस्कृति तो सदैव आत्ममूल्यांकन और सुधार के लिये प्रतिबद्ध रही है , तभी तो न जाने कितने ही नये धार्मिक पंथो का जन्म इसी भारत भूमि पर हुआ। कभी प्रेम से, कभी दर्शन से, कभी सामाजिक चेतना के कारण तो कभी तलवार के दम पर भी हिंदू धर्म अनेक धार्मिक पंथों में विभाजित होता रहा। लेकिन वर्तमान समय में देश का ही नहीं दुनिया का भी एक बडा तबका धार्मिक - या मज़हबी आधार पर किसी भी प्रकार के उत्पीडन, शोषण या जबरदस्ती के विरुद्ध है। 09/11 के बाद से बदले हुए वैश्विक परिदृश्य में दुनिया का एक बडा हिस्सा इस्लामिक आतंक के विध्वंसकारी स्वरूप को देख और भुगत चुका है। ऐसे में आज जरुरी है इस्लाम पंथ के अनुयायी आत्ममूल्यांकन करें। यदि वो इस्लाम को एक शांतिपूर्ण मज़हब बताते हैं तो फिर उन आतंकी हमलों की आलोचनात्मक समीक्षा करें जो दुनिया भर में इस्लाम की छवि को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने वर्ष 2015 में अपनी लंदन यात्रा के दौरान भारतीय

जनसमुदाय के लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा था कि " इस्लाम के वास्तविक स्वरूप को सूफी परम्परा के परिप्रेक्ष्य में रखकर ही समझा जा सकता है, जिसने सूफी विचारधारा को समझा होगा वो कभी हाथ में तलवार उठा निहत्थो की जान ले ही नही सकता". वर्तमान समय मे जहाँ सम्पूर्ण विश्व इस्लाम के नाम पर हो रही हिंसाओ से व्यथित – पीडित है , भय व आतंक के ऐसे दौर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का यह वक्तव्य एक उम्मीद की किरण के रूप मे दृष्टिगत होता है। प्रस्तुत आलेख के माध्यम से हम सूफी काव्य के स्वरूप और वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता पर विचार प्रस्तुत करेंगे।

मुख्य शब्द - सूफी, सूफ़, इस्लाम, मलिक मोहम्मद जायसी, आध्यात्मिक प्रेम, निर्गुण काव्य, अभिनव अफलातूनी, ज़िहाद , जेरुसलम, कयामत का दिन

सूफी काव्य धारा -

सूफी विचारधारा के स्वरूप एवम परम्परा पर विचार करे तो हम देखते हैं कि समय - समय पर इतिहासकारों, दर्शनिकों और इस्लाम के जानकारों ने सूफी विचारधारा पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। ख्यातिप्राप्त मुस्लिम इतिहासकार अबुल फिदा के अनुसार "मुहम्मद साहब के समय से **45** व्यक्ति ध्यान **–** धारणा मे अपना समय लगाते रहे**.** ये महान आत्माये थी। यही अंशाबी सूफा **–** सूफी कहे जाते थे। उनके अनुसार "कयामत के दिन सूफी संत अग्रिम पंक्ति में खडे होंगे,कारण कि सदाचार ,पवित्रता और निष्ठा मे वे सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होंगे"**.** (सूफिज्म एंड भक्ति – ए कम्पराटिव स्टडी)

डा.सरला शुक्ला अपनी पुस्तक "जायसी के परवर्ती हिंदी सूफी कवि और काव्य" मे लिखती हैं – "उनके वस्त्र एक विशेष प्रकार के ऊन के बने होते थे**,** जो लोगो का ध्यान अनायास ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेते थे। सांसारिक वस्तुओ से उनका कोई मोह नही था। ईश्वर के अनुराग तथा अबाध मिलन मे काल यापन करना ही उनका सर्वोच्च आदर्श था।इस प्रकार धन **–** वैभव **,** घर **–** परिवार आदि के प्रति उपेक्षा प्रदर्शित करना सूफियो के लिये स्वभाविक हो गया था।सादगी की यह वेशभूषा उनका केवल बाहरी परिधान नही था **,** यह सन्यास वृत सूफियो की आंतरिक मनोवृतियो को भी प्रदर्शित करता रहा।**"**

"रिलिजन ऑफ इस्लाम" मे मुहम्मद अली इस्लाम के विषय मे लिखते हैं - "इस्लाम" अरबी भाषा का शब्द है , जिसका अर्थ "शांति मे प्रवेश करना" होता है ,अत**:** "मुस्लिम वह व्यक्ति है जो परमात्मा और मनुष्य के साथ पूर्ण शांति का सम्बंध रखता हो**"**।

सूफियों के प्रमुख सिद्धांतः

सूफी साधक भारत में आकर अद्वैतवाद एवं सगुण भक्ति परंपरा के संपर्क में आए। उन्होंने प्रेम तत्व को अधिक महत्व दिया है। सूफियों के आध्यात्मिक सिद्धांत इस प्रकार हैं-

हक (ईश्वर)- सूफी मुसलमान थे इसलिए उनके सिद्धांतों को व्यक्त करने वाले शब्द प्रायः फारसी के हैं। सूफियों के अनुसार हक अर्थात ईश्वर और अद्वैत सत्ता एक ही है। आत्मा प्रभु के सम्मुख बंदा है और बंदा ईश्वर को प्राप्त करने का प्रयास करता है।आत्मा और परमात्मा अर्थात बंदा और हक एक ही है।

शैतान (माया)- बंदा और हक के बीच बाधा डालने वाला व्यक्ति या परिस्थिति शैतान अर्थात माया है। शैतान जीव को अल्लाह से अलग करने का प्रयास करती रहती है।

पीर (गुरु)- शैतान अर्थात माया के प्रभाव से बंदे को बचाने के लिए पीर या गुरु का होना आवश्यक है। पीर ही सही मार्गदर्शन द्वारा बंदे को शैतान की ताकत का सामना करने के लिए तैयार करता है और ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग सुझाता जाता है।

कायनात (जगत)- सूफी साधकों का विचार है कि यह संसार उस ईश्वर का ही प्रतिबिंब है। ईश्वर सर्वत्र है और सृष्टि के प्रत्येक कण में समाया हुआ है। इसीलिए संपूर्ण सृष्टि का सौंदर्य प्रेम की वस्तु है। संसार के दर्पण में ही अल्लाह के दर्शन होते हैं।

प्रेम मार्ग (इश्क)- बंदा हक को पाने के लिए अर्थात आत्मा परमात्मा को पाने के लिए जिस मार्ग पर चलता है उसे सूफियों द्वारा प्रेम मार्ग या इश्क का रास्ता कहा गया है। 'इश्क मिजाजी से इश्क हकीकी' सूफियों का प्रमुख सिद्धांत है अर्थात संसार से ईश्वर तक की यात्रा। यह यात्रा अनेक मंजिलों से होकर गुजरती है और अंत में ईश्वर तक पहुंचाती है।

सूफी काव्यधारा का स्वरूप और योगदान -

सूफी काव्यधारा निर्गुण भक्ति की दूसरी शाखा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे प्रेमाश्रयी शाखा के रूप में संज्ञापित किया है। संत कवियों ने जहाँ एक ओर सर्वसाधारण के लिए भक्ति के साधारण मार्ग की प्रतिष्ठा की, वहीं दूसरी ओर सूफी फकीरों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रयास किया। इस कार्य में संत कवियों की अपेक्षा उन्हें आशातीत सफलता मिली। सूफी फकीर दोनों संस्कृतियों के सुंदर सामंजस्य के पक्षधर थे। सूफीमत इस्लाम धर्म की एक उदार शाखा है जिसका उदय इस्लाम के अस्तित्व में आने के बाद हुआ। सूफियों के चार सम्प्रदाय भारत में मिलते हैं- चिश्ती सम्प्रदाय, सोहरावर्दी सम्प्रदाय (12वीं शती), कादरी सम्प्रदाय (15वीं शती), नक्सबंदी सम्प्रदाय (15वीं शती)। इन सूफी संतों के उच्च विचार, सादा जीवन और व्यापक प्रेम के तत्वों ने भारतीय जन-जीवन को आकृष्ट किया।

सूफी काव्यधारा ने भक्तिकालीन काव्य को प्रेम दर्शन की नवीन दृष्टि प्रदान की है। इन कवियों का ध्यान मानव जीवन के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित था। सूफियों की मान्यता थी कि मनुष्य हृदय की क्षुद्रताओं को प्रेम ही हटा सकता है।इस धारा के सभी मुसलमान सूफी कवियों में धार्मिक संकीर्णता का नामों-निशान तक नहीं है। इनका समूचा साहित्य एक व्यापक विश्व बंधुत्व और विश्व दृष्टि की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। इनकी दृष्टि में लौकिक प्रेम और ईश्वरीय प्रेम में कोई फर्क नहीं है। सूफी संतो के अनुसार 'इस्लाम' शब्द का लाक्षणिक अर्थ है "वह धर्म जिसके द्वारा मनुष्य भगवान की शरण लेता है तथा मनुष्यों के प्रति अहिंसा एवं प्रेम का बर्ताव करता है। लेकिन आज " इस्लाम" के जिस रूप को इस्लाम के तथाकथित ठेकेदारों द्वारा आतंक के माध्यम से विश्वभर में प्रस्तुत किया जा रहा है उसके चलते इस्लाम से प्रेम कम किंतु भय अधिक महसूस होता है। भय या आतंक के इस सम्बंध में जिसमे बंदा खुदा की ओर आंख उठाकर देख भी नही सकता , यह किसी भी मायने मे इस्लाम की वास्तविक अवधरणा से मेल नही खाता।

अतीत पर गौर करने पर भी हम देखते हैं कि जब – जब भय या आतंक को इस्लाम के मूल्यों रूप में प्रस्तुत किया गया है तब – तब किसी ना किसी रूप में खुद इस्लाम के अनुयाईयों द्वारा उसका विरोध किया गया है और इस्लाम को उसकी वास्तविक अवधारणा में पुन: सन्योजित किया गया है। कालांतर मे भी " "हुलूल" और "तकसीर" जैसे सिद्धांतो की घोषणा इसके उदाहरण हैं. "हुलूल" यानि यह विश्वास की मनुष्य ईश्वर की कोटि तक पहुंच सकता है और "तकसीर" यानि ईश्वर भी चाहे तो मनुष्य रूप में प्रकट हो सकता है।

सूफी साहित्य का अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि मुस्लिम समाज में ऐसे कई चिंतक उत्पन्न हुए जिन्हे अनेक प्रकार के प्रश्न झकझोर रहे थे। जैसे ' ईश्वर की प्रकृति क्या है?' 'सृष्टि और मानव के साथ उसका क्या सम्बंध है? आत्मा का रूप क्या है? और ईश्वरीय ज्ञान किसे कहते हैं? इन प्रश्नों का सामाधान खोजने वालो में 'मोतजली सम्प्रदाय' सबसे आगे था, 'मोतजली' चिन्तक निर्मुक्त विचारक थे और उनकी दृष्टि बहुत ही उदार थी. इन चिंतको मे ' अलगज़ाली' (1050- 1112 ई.) सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक माने जाते हैं.अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " तुहफतुल – फिलासफा" के माध्यम से वे कहते हैं कि तर्क के द्वारा केवल उसे प्राप्त किया जा सकता है जो सापेक्ष (बुद्धिगम्य) है, उसे नही जो निरपेक्ष (ज्ञानातीत) है. "अलगज़ाली" की भी यही मान्यता थी की ईश्वर और जीव के स्वभाव मे मौलिक एकता है , इसिलिये जीव ईश्वर को जान सकता है तथा मृत्य के बाद भी वह ईश्वर की कोटि तक पहुंच भी सकता है। वास्तविकता में कहा जाये तो इस्लाम के भीतर ज्ञान और भक्ति के समन्वय का आरम्भ 'अलगज़ाली' से ही होता है। साथ ही ऐसे मुक्त चिंतको में 'उमर खैयाम' और 'अबुल अरा' का नाम भी प्रमुखता से शामिल है। इस्लाम मे अभिनव – अफलातूनी विचारो का बीज रोपण इन्हीं मुक्त चिंतको द्वारा हुआ, "अभिनव-अफलातूनी" विचार के अनुसार 'जीव परमात्मा से अलग होने के बाद उसके विरह में बेचैन रहता है , और शांति उसे तभी मिलती है जब वह वापस होकर वह परमात्मा में लीन हो जाता है।' यही वह मुख्य विचार दर्शन है जो आगे चलकर सूफी मत की नींव बना।

सूफी मत मे प्रेम का विशेष महत्व है , इसमे इश्क मज़ाज़ी (लौकिक प्रेम) से इश्क हकीकी (अलौकिक प्रेम) तक पहुंचा जाता है। मनुष्य का हृदय स्वाभावत: ही प्रेम चाहता है , वह चाहता है कि उसका आराध्य भी उस से प्रेम करे, उसे अपने साथ हंसने - बोलने और खेलने - कूदने की आज़ादी दे, अतएव खुदा ओर बंदे के सम्बंध मे जो कठोरता हम इस्लाम के आरम्भ मे देखते है , सूफी मत के प्रचार के साथ - साथ उसमे ढील आने लगी और बंदा धीरे - धीरे खुदा को वह रूप देने लगा जो प्रेम और माधुर्य के अधिक अनुकूल था।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सूफी मत का महत्व और उपयोगिता -

वर्तमान परिदृश्य मे इस्लाम की मूल अवधारणा को पुना: स्थापित् करने की आवश्यकता है ,भले ही इस्लाम अपने मूल स्वरूप मे एकेश्वरवाद पर जोर देता है , किंतु विधर्मियो को तलवार के जोर से इस्लाम में लाने की शिक्षा कुरान नही देता। नमाज़, रोज़ा , ज़कात, हज़ और ज़िहाद ये इस्लामी धर्म के मूल माने जाते हैं , बल्कि ज़िहाद तो एक तरह से सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य समझा जाता है। ज़िहाद का सामन्य अर्थ धर्म युद्ध है. क्लेन नामक एक विद्वान ने ज़िहाद का अर्थ संघर्ष बताया है और इस संघर्ष के उसने तीन क्षेत्र माने हैं - (1) दृश्य शत्रु के विरुद्ध संघर्ष , (2) अदृश्य शत्रु (जिन) के विरुद्ध संघर्ष ,(3) इंद्रियो के विरुद्ध संघर्ष.

साधारणता विद्वानों का यह मत है कि इस्लाम के प्रचार के लिये जो लडाईयां लडी गयी उन्हें पवित्र विशेषण देने के लिये ही इस शब्द का "दुरुपयोग" किया गया । मुहम्मद अली अपनी पुस्तक 'रिलिजन ऑफ इस्लाम' में कहते हैं कि **"** इस शब्द(ज़िहाद) का अर्थ इस्लाम के प्रचार के लिये युद्ध करना नही है। मक्का मे उतरने वाले कुरान के अंशो में जहाँ **-** जहाँ ये शब्द आया है **,** वहां **-** वहां इसका अर्थ परिश्रम **,** उद्योग या सामान्य संघर्ष ही है । लडने की इज़ाज़त नबी ने तब ही दी **,** जब वे भाग कर मदीने पहुंचे**,** मदीने में आत्मरक्षा के लिये तलवार उठाना आवश्यक हो गया था**,** वहीं से लडाईयां **"**ज़िहाद**"** के नाम से लडी जाने लगी।**"**

समाहार **-** वर्तमान मे हम देखते हैं की दुनिया भर के तमाम आतंकी संग्ठन अपने निज़ी स्वार्थो के लिये आये दिन बेगुनाहो को मौत के घाट उतारते रहते हैं , आई.एस हो या तहरीक -ए- तालिबान , बोको हरम हो ,लशकर -ए तैयबा हो या जैश - ए - मोहम्मद , सभी आतंकी समूहों ने अपने निज़ी स्वार्थो को 'ज़िहाद' का ज़ामा पहनाकर सम्पूर्ण् मानवता के विरुद्ध एक अघोषित युद्ध छेड रखा है। जिसमे बेगुनाह मरते है , बेघर होकर भटकते हैं. ऐसे वक़्त में हर व्यक्ति के लिये यह सोचना आवश्यक हो जाता है की हिंसा, हत्या और आतंक के ऐसे नंगे - नाच से आखिर भला किसका होगा?
आज सम्पूर्ण विश्व को आपसी धार्मिक - वैचारिक मतभेदों को दरकिनार कर मानवता की रक्षा के लिये इस्लामी आतंक के संकट का सामना मिलकर करना होगा। भावी पीढियों को सूफीमत के माध्यम से इस्लाम को समझने लिये प्रेरित करना होगा, हाथ मे बंदूक उठाकर "ज़िहाद" के नाम पर भटक रहे युवाओं को समझाना होगा। बेगुनाहो को मारकर कायनात जन्नत मिलेगी इस भुलावे से निकालकर उन्हें वैश्विक मानवीय मूल्यों से जोडना होगा। उन्हें समझाना होगा कि मनुष्य प्रेम ,सेवा और सौहार्द के भाव से ही परमात्मा के अधिकाधिक निकट पहुंच सकता है। ईश्वर को पानें के लिये, सूफीयों के सादा - जीवन , उच्च विचार के दृष्टिकोण को अपनाना ही एक मात्र जरिया है। इस्लाम के अनुयाइयों, धर्म उपदेशकों को स्वयं आगे आकर सूफी मत का प्रचार करना चाहिये, सूफीयों की जीवनशैली, विचारधारा और भक्तिभावना का अधिकाधिक प्रसार करना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ -

1. सूफिज्म एंड भक्ति – ए कम्परैटिव स्टडी - एम.डी. शिराज़ुल इस्लाम - काउंसिल फॉर रिसर्च इन वैल्युज़ एंड फिलॉसफी - मार्च 2004
2. जायसी के परवर्ती हिंदी सूफी कवि और काव्य - डॉ.सरला शुक्ल - लखनऊ विश्विद्यालय विक्रम सम्वत 2013

3. “रिलिजन ऑफ इस्लाम - मौलाना मोहम्मद अली - अहमदिया अंजुमन इशात इस्लाम लाहौर - यूएसए - 2015
4. सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएं - डॉ.सुनीता शर्मा - https://sunitasharmahpu.wordpress.com/ - दिसम्बर 2015
5. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल - लोकभारती प्रकाशन - 8वां संस्करण 2012
6. सूफीवाद - डॉ.प्रभा श्रीनिवासुलु तथा डॉ.गुलनाज़ तंवर - मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी - 2011
7. सूफीवाद - कुछ महत्वपूर्ण लेख - एन.आर. फारूकी - ऑरिएंट ब्लैकस्वान - 2014
8. सूफीवाद के आध्यात्मिक आयाम - ज़फर रज़ा- लोकभारती प्रकाशन - 2014

स्व- घोषणा पत्र

मैं प्रमाणित करती हूं कि **"** बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में सूफी विचारधारा का पुनर्मूल्यांकन**"** मेरा मौलिक शोध आलेख है।इस शोध पत्र के लेखन में कहीं से नकल नहीं की गयी है। शोधपत्र लेखन में प्रयुक्त पुस्तकों, आलेखों और अध्ययन सामग्रियों का विस्तृत संदर्भ लेख के अंत में संलग्न है।

डॉ.सुजाता मिश्र
अतिथि शिक्षक (हिंदी)
डॉ.हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.
Email:sujata0630@gmail.com
Mob:9425821780